कहानी

दिल से अमीर बना रामू

एक समय की बात है, एक छोटे से गाँव में रामू नाम का एक गरीब लेकिन ईमानदार लड़का रहता था. उसके माता-पिता बहुत पहले गुजर चुके थे, इसलिए वह अपनी बूढ़ी दादी के साथ एक छोटी सी झोपड़ी में रहता था. दादी उसे रोज रात को कहानियाँ सुनाती थीं और सिखाती थीं कि जीवन में

सच्चाई और मेहनत सबसे बड़ी ताकत होती है. रामू दिन भर गाँव के लोगों के छोटे-मोटे काम करता और जो भी मिलता उसी से अपना और दादी का पेट भरता.

एक दिन गाँव में खबर फैली कि पास के जंगल में एक पुराना खजाना छिपा हुआ है, जिसे जो भी ढूंढ लेगा उसकी किस्मत बदल जाएगी. यह सुनकर कई लोग लालच में जंगल की ओर निकल पड़े. रामू ने भी सोचा कि अगर उसे वह खजाना मिल जाए तो वह अपनी दादी के लिए अच्छा घर बना सकता है और उन्हें आराम दे सकता है, लेकिन दादी ने उसे समझाया कि बेटा, लालच में कभी गलत रास्ता मत चुनना, अगर जाना तो ईमानदारी और समझदारी के साथ जाना. अगले दिन रामू जंगल की ओर निकल पड़ा, रास्ता कठिन था, जगह-जगह कांटे और ऊँचे पेड़ थे, लेकिन वह हिम्मत नहीं हारा. चलते-चलते उसे एक बूढ़ा आदमी मिला जो बहुत थका हुआ और भूखा लग रहा था. उस आदमी ने रामू से पानी और खाना मांगा.

रामू के पास थोड़ा सा ही खाना था, लेकिन उसने बिना सोचे अपना खाना उस बूढ़े को दे दिया. बूढ़े ने खुश होकर उसे आशीर्वाद दिया और कहा कि सच्चे दिल वाले लोगों की हमेशा मदद होती है. रामू आगे बढ़ा तो उसे एक घायल हिरण दिखा, वह दर्द से कराह रहा था. रामू ने अपना समय लगाकर उसके घाव पर पत्ते बांधे और उसे पानी पिलाया. हिरण की आँखों में कृतज्ञता थी और वह धीरे-धीरे चलकर जंगल में गायब हो गया. शाम होने लगी थी और रामू को खजाने का कोई पता नहीं चला था, लेकिन वह निराश नहीं हुआ.

तभी अचानक उसके सामने एक पुराना पेड़ दिखा जिसके नीचे एक छोटा सा संदूक रखा था. रामू ने सोचा शायद यही खजाना है. उसने संदूक खोला तो उसमें सोने-चांदी के बजाय कुछ पुराने सिक्के और एक चिट्ठी थी. चिट्ठी में लिखा था कि यह खजाना उस इंसान के लिए है जो दिल का सच्चा और दयालु हो, असली खजाना धन नहीं बल्कि अच्छे कर्म और सच्चा दिल है. जैसे ही रामू ने चिट्ठी पढ़ी, वही बूढ़ा आदमी उसके सामने प्रकट हुआ, लेकिन अब वह साधारण इंसान नहीं बल्कि एक जादुई साधु था. उसने कहा कि मैंने तुम्हारी परीक्षा ली थी, तुमने भूखे को खाना दिया, घायल जानवर की मदद की और लालच में आकर किसी का नुकसान नहीं किया, इसलिए तुम सच्चे खजाने के हकदार हो. इतना कहते ही वह संदूक चमकने लगा और उसमें असली सोने के सिक्के भर गए.

रामू खुश हो गया लेकिन उसे दादी की सीख याद थी, उसने साधु से कहा कि उसे बस इतना ही चाहिए जिससे वह अपनी दादी का ख्याल रख सके, बाकी धन वह गाँव वालों की भलाई में लगाना चाहता है. साधु उसकी इस सोच से बहुत प्रसन्न हुआ और उसे आशीर्वाद देकर गायब हो गया. रामू घर लौटा और उसने अपनी दादी को सारी बात बताई. दादी की आँखों में खुशी के आँसू आ गए. कुछ ही समय में रामू ने अपने लिए एक छोटा सा घर बना लिया और बाकी पैसे से गाँव में कुआँ बनवाया, स्कूल की मरम्मत करवाई और गरीबों की मदद की. गाँव के लोग अब उसे बहुत सम्मान देने लगे.

रामू ने साबित कर दिया कि सच्ची खुशी दूसरों की मदद करने में होती है, ना कि केवल अपने लिए धन इकट्ठा करने में. इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि ईमानदारी, दया और निस्वार्थ भाव ही जीवन के सबसे बड़े खजाने हैं, और जो व्यक्ति अच्छे कर्म करता है उसे जीवन में सच्ची सफलता और सम्मान जरूर मिलता है.

बिंदु मिलाओ

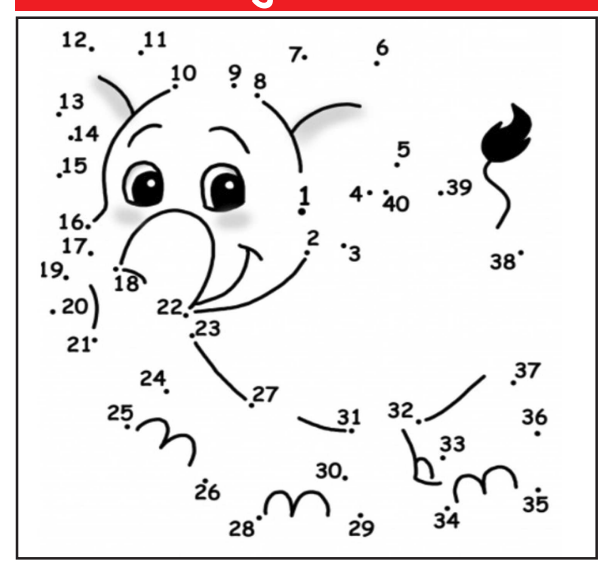

रंग भरो

प्रेरक प्रसंग

एम्स की जननी अमृत कौर

राजकुमारी अमृत कौर भारत की एक महान नेता, स्वतंत्रता सेनानी और समाजसेवी थीं, जिनका सबसे बड़ा योगदान देश की स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूत बनाने में रहा. उनके प्रयासों से ही अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की स्थापना हुई, जो आज भारत का सबसे प्रमुख और विश्वसनीय मेडिकल संस्थान माना जाता है. उनका सपना था कि भारत में ऐसा अस्पताल और मेडिकल कॉलेज बने, जहाँ उच्च स्तर की पढ़ाई हो और हर व्यक्ति को अच्छा इलाज मिल सके.

राजकुमारी अमृत कौर का जन्म 2 फरवरी 1887 को एक समृद्ध परिवार में हुआ था, लेकिन उन्होंने आरामदायक जीवन छोड़कर देश सेवा का मार्ग चुना. जब भारत अंग्रेजों के अधीन था, तब वे स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ीं और महात्मा गांधी के साथ मिलकर काम किया. उन्होंने सादा जीवन अपनाया और समाज के कमजोर वर्गों की मदद को अपना लक्ष्य बनाया.

1947 में भारत के आज़ाद होने के बाद, उन्हें देश की पहली स्वास्थ्य मंत्री बनाया गया. उस समय भारत में स्वास्थ्य सुविधाएँ बहुत कम थीं—अस्पतालों की कमी थी, डॉक्टर कम थे और लोगों में साफ-सफाई और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता भी कम थी. उन्होंने इन सभी समस्याओं को सुधारने के लिए कड़ी मेहनत की. उन्होंने नए अस्पताल खुलवाए, नर्सों और डॉक्टरों की ट्रेनिंग पर जोर दिया और लोगों को स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूक किया.

उन्होंने खासतौर पर महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य पर ध्यान दिया. वे चाहती थीं कि हर माँ और बच्चे को सही इलाज और पोषण मिले. उन्होंने टीकाकरण, पोषण और साफ-सफाई से जुड़े कई अभियान चलाए, जिससे लाखों लोगों को फायदा हुआ. इसके साथ ही, उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और उनके अधिकारों के लिए भी काम किया. उनका मानना था कि अगर महिलाएँ शिक्षित और स्वस्थ होंगी, तो पूरा समाज मजबूत बनेगा.

राजकुमारी अमृत कौर ने अपने काम में हमेशा ईमानदारी और समर्पण दिखाया. उन्होंने कभी भी मुश्किलों से हार नहीं मानी और हर चुनौती का सामना हिम्मत से किया. वे मानती थीं कि देश की सेवा करना सबसे बड़ा कर्तव्य है और हर व्यक्ति को अपने स्तर पर समाज के लिए कुछ अच्छा करना चाहिए.

बच्चों के लिए उनका जीवन एक बड़ी सीख है. उनसे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने सपनों को पूरा करने के लिए मेहनत करनी चाहिए और साथ ही दूसरों की मदद करने का भाव भी रखना चाहिए. सच्ची सफलता वही है, जिसमें हम अपने साथ-साथ दूसरों के जीवन को भी बेहतर बना सकें.

रोचक तथ्य

सबसे बड़ा सितारा सूरज

- सूरज एक तारा है, ग्रह नहीं.
- यह पृथ्वी के सबसे नजदीक स्थित तारा है.
- सूरज का व्यास लगभग 13.9 लाख किलोमीटर है.
- इसमें पूरे सौरमंडल का लगभग 99.8% द्रव्यमान होता है.
- सूरज मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम गैस से बना है.
- सूरज की रोशनी को पृथ्वी तक पहुँचने में लगभग 8 मिनट 20 सेकंड लगते हैं.
- इसकी सतह का तापमान लगभग 5,500 सी होता है.
- सूरज के केंद्र का तापमान लगभग 1.5 करोड़ डिग्री सेल्सियस होता है.

- सूरज की ऊर्जा 'नाभिकीय संलयन' प्रक्रिया से बनती है.
- सूरज के बिना पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं है.

भूल भुलैया

जानकारी

एक शांतिप्रिय पक्षी कबूतर

कबूतर एक बहुत ही सामान्य और प्राचीन पक्षी है, जो दुनिया के लगभग हर हिस्से में पाया जाता है. इसका वैज्ञानिक नाम कोलंबा लिविया है और इसे आमतौर पर रॉक पिजन भी कहा जाता है. कबूतर का शरीर मध्यम आकार का होता है, जिसमें छोटी गर्दन, गोल सिर और मजबूत पंख होते हैं. इनका रंग आमतौर पर धूसर (ग्रे) होता है, लेकिन सफेद, भूरा और मिश्रित रंगों में भी ये दिखाई देते हैं. कबूतर अपनी तेज उड़ान के लिए जाने जाते हैं और ये लंबे समय तक बिना

थके आसमान में उड़ सकते हैं. ये पक्षी काफी बुद्धिमान होते हैं और इनमें रास्ता याद रखने की अद्भुत क्षमता होती है, इसी कारण पुराने समय में इनका उपयोग संदेश भेजने के लिए किया जाता था. कबूतर दूर से भी अपने घर का रास्ता पहचान लेते हैं, जिसे 'होमिंग क्षमता' कहा जाता है.

कबूतर मुख्य रूप से अनाज, बीज, फल और छोटे कीड़े-मकोड़े खाते हैं. शहरों में ये मनुष्यों द्वारा दिए गए भोजन को भी आसानी से अपना लेते हैं. ये पक्षी अक्सर इमारतों, पुलों और पुराने ढांचों के कोनों में अपना घोंसला बनाते हैं. इनका घोंसला बहुत साधारण होता है, जो तिनकों, सूखी टहनियों और पत्तों से बना होता है. कबूतर एक बार में सामान्यत: दो अंडे देते हैं और नर तथा मादा दोनों मिलकर उनकी देखभाल करते हैं. कबूतर के बच्चों को 'स्क्वाब' कहा जाता है और शुरू में उन्हें एक विशेष प्रकार का दूध पिलाया जाता है, जिसे 'क्रॉप मिल्क' कहते हैं, जो माता-पिता के शरीर में बनता है.

कबूतर को शांति का प्रतीक भी माना जाता है और इसका महत्व कई धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों में देखा जाता है. इतिहास और कहानियों में भी इसका उल्लेख मिलता है. आज के समय में कबूतर शहरों में सबसे अधिक पाए जाने वाले पक्षियों में से एक हैं.

कविता

नन्ही चिड़िया

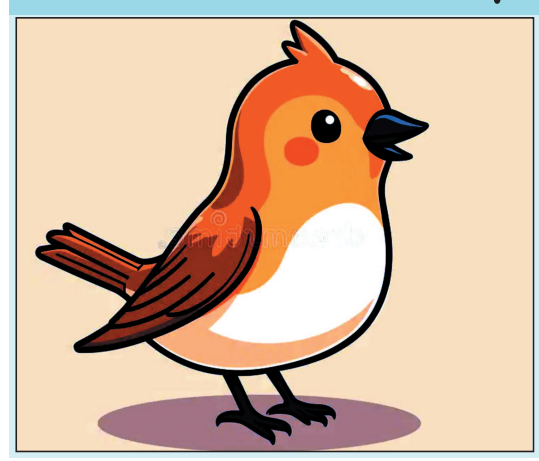

नन्ही चिड़िया आई आंगन,
चूं-चूं करती गाना गाए.
छोटे-छोटे पंख फैलाकर,
नीले गगन में उड़ती जाए.

दाना चुगकर पानी पीती,
फुदक-फुदक कर
खेल रचाए.
हम भी उससे सीखें मिलकर,
खुश रहना और गीत सुनाए.

बूझो तो जानें

- वह क्या है जिसकी गर्दन है पर सिर नहीं?

जवाब- बोतल

- काला घोड़ा, सफेद सवारी, एक उतरा तो दूसरे की बारी.

जवाब- तवा और रोटी

- बूझो भैया एक पहेली, जब काटो तो नई नवेली.

जवाब- पेंसिल

- एक लड़की 40 फीट ऊंची सीढ़ी से गिर गई, फिर भी उसे चोट नहीं लगी, कैसे?

जवाब- क्योंकि वह सबसे निचले पायदान से गिरी थी.

- वह क्या है जो तुम्हारा है पर उसे तुमसे ज्यादा दूसरे लोग इस्तेमाल करते हैं?

जवाब- तुम्हारा नाम

- क्या है जो हमेशा बढ़ती रहती है और कभी कम नहीं होती?

जवाब- उम्र

हंसी-ठिठोली

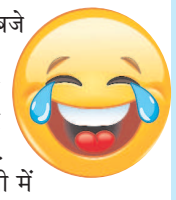

- चीकू-तुम रात में कितने बजे सोते हो?
  मीकु- अगर किताब उठा लूँ तो 9 बजे और अगर मोबाइल उठा लूं तो 2 बजे.
- टीचर- वाक्य को अंग्रेजी में ट्रांसलेट करो, वसंत ने मुझे मुक्का मारा.
  चिंटू-वसन्तपंचमी
- सोनू- हम लद्दाख घूमने गए थे, वहाँ जून में भी लोग गर्म पानी से नहाते हैं.
  नटखट नीटू- इसमें कौन सी बड़ी बात है, हम दिल्ली में भी जून में गर्म पानी से नहाते हैं.
  सोनू-वो कैसे?
  नटखट नीट-दिल्ली में जून की गर्मी में टंकी का पानी इतना गर्म हो जाता है कि नल से सिर्फ गर्म पानी ही आता है.
- इलेक्ट्रिशियन- यह रेडियो ठीक है, बस मौसम खराब होने की वजह से काम नहीं कर पा रहा है.
  यामुंडा- लो 100 रुपये, और इसमें नया मौसम डाल दो!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

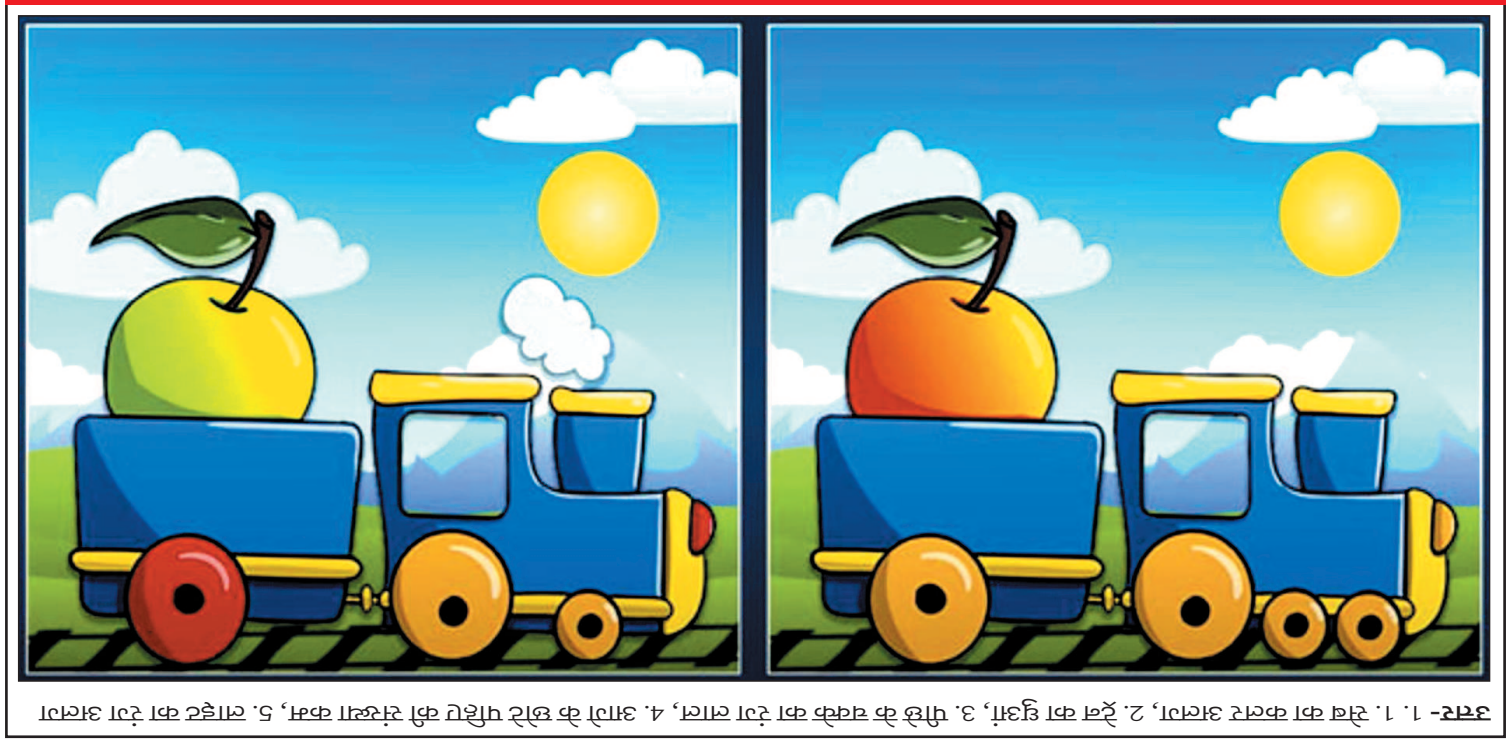

उत्तर- 1. सेब का कलर उतरा, 2. ट्रेन का धुआं, 3. पीछे के चक्के का रंग लाल, 4. आगे के छोटे पहिए की संख्या कम, 5. लाइट का रंग उतरा